

# Inhaltsverzeichnis

|                                                   |    |
|---------------------------------------------------|----|
| EINLEITUNG.....                                   | 14 |
| DER WAHRE JACOB.....                              | 18 |
| GESCHICHTE .....                                  | 18 |
| <i>Hamburg 1879–1880</i> .....                    | 18 |
| <i>Stuttgart 1884–1890</i> .....                  | 18 |
| <i>Nach 1890</i> .....                            | 18 |
| <i>Unterbrechung der Existenz 1923–1927</i> ..... | 19 |
| <i>Verbot 1933</i> .....                          | 19 |
| <i>Auflage</i> .....                              | 19 |
| GEDICHTE VON RUDOLF LAVANT .....                  | 20 |
| SCHLACHTGESANG DER CZECHEN VON KÖNIGINHOF. ....   | 20 |
| DER BORNIRTE OPPONENTENVERSTAND. ....             | 21 |
| DER KAROLINENSTREIT. ....                         | 23 |
| NACH DER POLENDEBATTE. ....                       | 24 |
| KLAGELIED.....                                    | 25 |
| IDIOTISCHES.....                                  | 28 |
| SCHLACHTGESANG DER CZECHEN VON KÖNIGINHOF. ....   | 30 |
| WEIHNACHTSABEND. ....                             | 31 |
| HIER STEHE ICH, ICH KANN NICHT ANDERS. ....       | 33 |
| LUDWIG UHLAND. ....                               | 34 |
| EIN GEDANKE. ....                                 | 36 |
| SIE SIND WIEDER DA! .....                         | 37 |
| NEUJAHR 1888! .....                               | 40 |
| OSTEN UND WESTEN.....                             | 41 |
| OSTERN. ....                                      | 43 |
| PFINGSTEN. ....                                   | 45 |
| PHANTASIE.....                                    | 47 |
| SYLVESTERNACHT.....                               | 49 |
| WEIHNACHT 1888. ....                              | 49 |
| EIN WINTERBILD. ....                              | 51 |
| KÄMPFERLOOS. ....                                 | 53 |
| ERWACHEN. ....                                    | 55 |
| AN "LA BELLE FRANCE." .....                       | 57 |
| EINEM VERSCHWINDENDEN.....                        | 59 |
| PFINGSTGEDANKEN. ....                             | 61 |

|                                                 |     |
|-------------------------------------------------|-----|
| GIORDANO BRUNO. ....                            | 63  |
| ZUR WELTAUSSTELLUNG. ....                       | 66  |
| VÄTERLICHE WARNUNG. ....                        | 68  |
| ZUM TROST. ....                                 | 69  |
| GEIST DER ZEIT. ....                            | 70  |
| UNSERE TODTEN. ....                             | 72  |
| DER 20. FEBRUAR. ....                           | 73  |
| RUHE NACH DEM STURM. ....                       | 74  |
| ZUR ERINNERUNG. ....                            | 75  |
| AN DEN KLADDERADATSCH. ....                     | 77  |
| EIN- UND DREIJÄHRIG. ....                       | 79  |
| DEM BEWUßTEN "EINSIEDLER" ....                  | 81  |
| IN REIH UND GLIED. ....                         | 82  |
| AN DEN HERRN MINISTER HERRFURTH EXZELLENZ. .... | 84  |
| NACH DEM KONGREß. ....                          | 86  |
| DIE LEBENSMÜDEN. ....                           | 88  |
| STOßSEUFZER. ....                               | 90  |
| BEIM ABSCHIED. ....                             | 91  |
| AN DIE "ALTE RAKETENKISTE." ....                | 93  |
| LONDON. ....                                    | 94  |
| AN HERRN CRISPI. ....                           | 96  |
| AGRARISCHES MANIFEST. ....                      | 98  |
| DER NEUE KURS. ....                             | 99  |
| DER WELFENFONDS. ....                           | 101 |
| GEGENWART UND ZUKUNFT. ....                     | 103 |
| AM ENDE DES NEUNZEHNTEN JAHRHUNDERTS. ....      | 105 |
| DIE DEUTSCHEN-HETZE. ....                       | 106 |
| 1878 — 1891. ....                               | 108 |
| BOCHUM. ....                                    | 110 |
| "DREI MONATE FABRIKARBEITER." ....              | 111 |
| ZWEI GEGNER. ....                               | 112 |
| DEN BRITEN. ....                                | 113 |
| EINE VISION. ....                               | 114 |
| SEHNSUCHT. ....                                 | 116 |
| UNSERN HERRN REICHSUNMITTELBAREN. ....          | 117 |
| AN OTTO. ....                                   | 118 |
| WIE IN EINEM SPIEGEL. ....                      | 120 |

|                                                |     |
|------------------------------------------------|-----|
| DER NEUE GÖTZ VON BERLICHINGEN. ....           | 121 |
| DER HAMBURGER VETTERNSCHAFT. ....              | 123 |
| HERBST. ....                                   | 124 |
| WEIHNACHTEN. ....                              | 125 |
| ZUM NEUEN JAHRE. ....                          | 126 |
| DEN THEILERN. ....                             | 129 |
| OSTERMORGEN. ....                              | 131 |
| FRÜHLING. ....                                 | 133 |
| EIN EPILOG. ....                               | 134 |
| IN DER NACHT VOM 15. ZUM 16. JUNI 1893. ....   | 136 |
| HULDIGUNG DER FREIHEIT. ....                   | 138 |
| DIE FREIHEIT. ....                             | 139 |
| AM STRANDE. ....                               | 141 |
| GEISTERSPUK. ....                              | 143 |
| DIE IDEALE DES DEUTSCHEN VOLKES. ....          | 144 |
| DIE MODERNE SPHINX. ....                       | 146 |
| WEIHNACHTEN. ....                              | 148 |
| EINE ALLTAGSGESCHICHTE. ....                   | 149 |
| EHERNE MAIGLOCKEN. ....                        | 154 |
| PRO DOMO. ....                                 | 155 |
| WIDER DIE REAKTION. ....                       | 156 |
| VOR DER SCHLACHT. ....                         | 157 |
| ROBERT BLUM. ....                              | 158 |
| AN DIE FRAUEN. ....                            | 159 |
| SOZIALREFORM. ....                             | 160 |
| STROHDACH- UND SCHLOTJUNKER. ....              | 162 |
| BEKENNTNIß. ....                               | 163 |
| FRANKREICH. ....                               | 164 |
| DEM HERRN GRAFEN VON LIMBURG-STIRUM. ....      | 165 |
| DIE HENKER VON RENNES. ....                    | 166 |
| KRAFT UND LIST. ....                           | 167 |
| DER SOHN DES HOCHLANDS. ....                   | 169 |
| DIE FABRIK. ....                               | 170 |
| SPION-KOP. ....                                | 171 |
| JOHN RUSKIN. * ....                            | 172 |
| DIE ROTHE FAHNE. ....                          | 173 |
| AN DER BAHRE DES SOLDATEN DER REVOLUTION. .... | 174 |

|                                            |     |
|--------------------------------------------|-----|
| FINIS TRANSVAALIAE. ....                   | 175 |
| DER MITTELLANDKANAL AUF AKTIEN. ....       | 177 |
| KAPITALISTEN-KLAGE. ....                   | 178 |
| VIER WORTE. ....                           | 180 |
| NACH EINEM JAHRE. ....                     | 181 |
| PHILISTERANGST. ....                       | 182 |
| KRIEG AUF'S MESSER! ....                   | 183 |
| KONTRASTE. ....                            | 185 |
| WRESCHEN. ....                             | 186 |
| TOMMY'S WEIHNACHTEN. ....                  | 187 |
| UNSERE SCHWARZEN. ....                     | 187 |
| DESPOTISMUS GEMILDERT DURCH DYNAMIT. ....  | 188 |
| MASKEN. ....                               | 189 |
| BERNHARDS "BÜCHMANN". ....                 | 190 |
| HEILIGE GRÄBER. ....                       | 192 |
| DER HÄUPTLING DER ALL-DEUTSCHEN. ....      | 193 |
| DIE VIER KANZLER. ....                     | 194 |
| RAUBRITTER. ....                           | 195 |
| DEM REICHSKANZLER. ....                    | 196 |
| IN DER VORSTADT. ....                      | 196 |
| DER REICHE MANN UND DER ARME LAZARUS. .... | 197 |
| MARTINIQUE. ....                           | 198 |
| SOMMERSCHWÜLE. ....                        | 199 |
| KRIEGSGESANG DER HAKATISTEN. ....          | 200 |
| RUDOLF V. BENNIGSEN. ....                  | 200 |
| MINISTERPECH. ....                         | 201 |
| DEN JUNKERN. ....                          | 202 |
| GRAF PÜCKLER. ....                         | 202 |
| AGRARIER UND DIÄTEN. ....                  | 203 |
| IN ALLEN ZONEN. ....                       | 204 |
| DER ZENTRUMSTURM. ....                     | 205 |
| DER GEMACHTE MANN. ....                    | 206 |
| WIE'S KOMMEN WIRD. ....                    | 207 |
| DIE SACHSENSCHLACHT. ....                  | 208 |
| NACH DER SCHLACHT. ....                    | 210 |
| DIE REAKTIONÄRE MASSE. ....                | 211 |
| DEN TOTEN. ....                            | 212 |

|                                             |     |
|---------------------------------------------|-----|
| DES DEUTSCHEN LEBENSLAUF. ....              | 213 |
| SEHNSUCHT. ....                             | 214 |
| KARTOFFELFEUER. ....                        | 215 |
| DER LANDBRIEFTRÄGER. ....                   | 216 |
| SÄCHSISCHE WAHLREFORM. ....                 | 217 |
| DES KAMPFES ENDE. ....                      | 218 |
| MÄRZGEDANKEN. ....                          | 220 |
| GERMANIAS KLAGE. ....                       | 221 |
| DIE LIBERALEN UND DIE SCHULE. ....          | 222 |
| MANÖVERLEHREN. ....                         | 223 |
| DER MUSTER-KANZLER. ....                    | 224 |
| AN DIE DEUTSCHEN MACHTHABER! ....           | 226 |
| UNSRE FAHNE. ....                           | 227 |
| DEUTSCHLAND VORAN! ....                     | 228 |
| FÜR RUßLAND. ....                           | 229 |
| DER DESERTEUR. ....                         | 230 |
| JENA. ....                                  | 232 |
| KÜHNEMÄNNER. ....                           | 234 |
| TROST BEIM WANDERN. ....                    | 235 |
| ZUR ABWEHR! ....                            | 235 |
| UNSER WEIHNACHTSBAUM. ....                  | 236 |
| DRESDEN. ....                               | 238 |
| DIE STRASSENSCHLACHT IN MOSKAU. ....        | 239 |
| DIE SCHARFMACHER AM WAHLRECHTSSONNTAG. .... | 240 |
| VOM KOLONIALAMT. ....                       | 241 |
| AN UNSERE FEINDE. ....                      | 243 |
| NATIONALLIBERALE „OPPOSITION“. ....         | 244 |
| KONSERVATIVES KLAGELIED. ....               | 245 |
| UNSEREN ÖSTERREICHISCHEN GENOSSEN. ....     | 246 |
| HEIMKEHR. ....                              | 247 |
| DAS SÄCHSISCHE WAHLGESETZ. ....             | 248 |
| AUF GEFÄHRLICHEM POSTEN. ....               | 249 |
| DIE LUFTFLOTTEN. ....                       | 249 |
| FRIEDENSBÜRGSCHAFT. ....                    | 251 |
| „MIR SACHSEN!“ ....                         | 252 |
| GLAGELIED. ....                             | 252 |
| DE NAHZIENALEN LEIBZGER. ....               | 253 |

|                                       |     |
|---------------------------------------|-----|
| AUS SACHSEN. ....                     | 254 |
| DIE KRIEGSFURIE. ....                 | 255 |
| DE FENSTERSCHDEIER. ....              | 256 |
| DER FRIEDENSTIFTER.....               | 257 |
| ZABERN. ....                          | 259 |
| DIE DREI WEHRBEITRAGS-TERMINE.....    | 260 |
| DAS UNTERSEEBOOT. ....                | 261 |
| MATER DOLOROSA.....                   | 262 |
| MEIN KLEINER FREUND. ....             | 263 |
| GETEILTES LEID. ....                  | 264 |
| HEIßER WUNSCH.....                    | 265 |
| NACHRUF.....                          | 266 |
| AUFFORDERUNG.....                     | 268 |
| VERSCHIEDENES ÜBER RUDOLF LAVANT..... | 269 |
| WERKE: .....                          | 269 |
| NACHRUF: .....                        | 270 |
| IM INTERNET:.....                     | 270 |